

جنوری ۲۰۱۸ء

ماہنامہ

شعاعِ عمل

لکھنؤ

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ
بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینہ غفران مااب، چوک، لکھنؤ-۳

ISSN 2456-8384

Vol.-14, Issue-7

R.N.I NO. UPBIL/2004/13526

Pages:72

Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2017-19 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

Annual Rs. 200/-

January 2018

Per Copy- Rs.25/-

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ



حجت الاسلام سیدالواعظین مولانا سید کلب حسین نقوی جاسی
ابن
رئیس العلماء حجت الاسلام مولانا سید ولی محمد حسین نقوی مجتہد

SHUA-E-AMAL

Lucknow



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufra Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

Per Copy 25/-
Annual 200/-

कुल पृष्ठ : 72

ISSN 2456-8384

वर्ष
14

अंक
7

न्यास संस्थापन

15 जमादिलउला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलउला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:

मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

सलाहकार समिति

- प्रोफेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक्वी, अलीगढ़
- डॉ० महदी ख्वाजा पीरी, ईरान
- मौलाना हसन जफर नक्वी, कराची
- कैप्टन सिकन्दर रिजवी, लखनऊ
- प्रोफेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- डॉ० अरशद अली जाफरी, लखनऊ
- शायरे अहलेबैत रजा सिरसिवी, सिरसी
- सै० सैफ़ तकी नक्वी, दिल्ली
- मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

बिस्मिल्ली तआला

नूरे हिदायत फाउण्डेशन के

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

जनवरी— 2018 ई०

शुआ-ए-अमल

“लखनऊ”

संरक्षक

काएदे मिल्लत प्रोफेसर मौलाना सै० कल्बे जवाद नक्वी साहब

माननीय नवाब रजा साहब, भोपाल

माननीय सै० अहमद अब्बास नक्वी साहब, मुम्बई

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक्वी ‘असीफ़’ जायसी

उप-सम्पादक

कायम महदी नक्वी ‘तज़हीब’ नगरौरी

आसिफ़ अब्बास नौगांवी

मिलने का पता

नूरे हिदायत फाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230

Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक्वी द्वारा स्वामी एस कल्बे जवाद नक्वी के लिए निजामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोजिट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फाउण्डेशन, इमामबाड़ा गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।

सम्पादक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक्वी

जनवरी -2018

मासिक “शुआ-ए-अमल” लखनऊ

3

सम्पादन समिति

- ⇒ डॉ० अमानत हुसैन नकवी
- ⇒ हैदर अब्बास नकवी, इलाहाबाद
- ⇒ अमील शम्सी, लखनऊ
- ⇒ वासिफ अहमद नकवी 'समीर'
- ⇒ महदी रज़ा
- ⇒ शाहिद अली आजमी
- ⇒ जुलफ़ेकार हैदर आजमी
- ⇒ अलहाज मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- ⇒ डॉ० आरिफ़ अब्बास
- ⇒ रेहान आलम, लखनऊ
- ⇒ सलमान हुसैन, लखनऊ
- ⇒ बिनते ज़हरा 'नदल हिन्दी'
- ⇒ अलहाज फ़रीद महदी रिज़वी

- ज़फ़र हुसैन रिज़वी ब्यूरोचीफ़ मुम्बई
- इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश
- कैफ़ तकी नकवी, ब्यूरोचीफ़ देहली

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼
Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2017-2019

WEBSITE:

www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:

noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com
shuaeamallucknow@gmail.com

वार्षिक अंशदान

- 1- एक साल के लिए 200/-
- 2- पांच साल के लिए 800/-
- 3- लाईफ़ मिम्बरशिप 5000/-

विषय सूची

जनवरी 2018 ई०
रबीउस्सानी 1439 हि०

नं०	लेख व लेखक	पृष्ठ
1.	शहीदे इन्सानियत (किस्त-10) आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सै० अली नकी नकवी	5
2.	मज़हब या ज़मीर (किस्त-2) आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सै० अली नकी नकवी	13
3.	क़ता शाएर-ए-मिल्लत बानो सैदपूरी	16
4.	मुख्य समाचार इदारा	17

मासिक

“शुआ-ए-अमल”

(हिन्दी-उर्दू)

“ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर”

दैनिक नकीब लखनऊ

और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित
सभी किताबों को डाउनलोड करने के लिए
लॉग आन करें हमारी वेबसाइट

Log on Our Website:

www.noorehidayatfoundation.org,
www.naqeeblucknow.com

'kghn: bu l kfu ; r

vk; rYykfgy mte k l; ;ny myek ekykuk lO vyh udh udoh rkck ljk

n ljk okd; k एक शख्स थे हतात बिन जैद बिन अलकमा तमीमी दारमी। हजरत रसूल अल्लाह^{स0अ0} ने उनमें और मुआविया में मुवाखात (भाई चारगी) करार दी थी, वेसी ही मुवाखात जैसी एक मर्तबा मुहाजरीन में और एक मर्तबा मुहाजरीन और अन्सार में की गई थी। हर शख्स जानता था कि इस मुवाखात से नसबी एहकाम जारी नहीं होते और मीरास एक की दूसरे को नहीं मिलती। यही अमल दर आमद मुत्तफिका तौर पर साबित था कि हर एक की मीरास उसके नस्बी वुरसा (वारिसों) को पहुँचे। उस मज़हबी भाई को नहीं जो मुवाखात के जरिये से भाई करार दिया गया है। मगर इत्तेफाक की बात कि हतात, मुआविया के पास आये हुए थे और उनका वहीं इन्तेकाल हो गया तो मुआविया ने उनकी मीरास पर कब्ज़ा कर लिया। यह कहकर कि यह मेरा भाई है। इस पर भी मुसलमानों में शोर हुआ यहाँ तक कि फरज़दक ने इस बारे में शेअर

vcod o vek ;k evkoh vkj l k
rjkl u Q;guk tRrjkl vdkjck
Qek cky ehjkfly grkr vdyk
o ehjkl l [kj tkfen yd tucgh
Qykdku gkt y ve Qh tkgfy; k
vyer euy ejf, y dyhy [kyk;cg
o ykl dku Qh nhu l ok t k
yek gd duk vkxL l k fcyek, 'kkjck
(यानी) तुम्हारे बाप ने और मेरे चचा ने ऐ
मुआविया मीरास छोड़ी तो उसूल यही रहा कि
मीरास कराबतदारों को दी जाये। फिर क्या

बात है कि हतात की मीरास तो तुमने नोष जाँ फरमाई और अबू सुफियान की मीरास तुम्हारी ही मिलकियत करार पाई। पस यह मुआमला अगर ज़मान-ए-जाहिलियत की रस्म में दाखिल है तो हमें इसका इल्म होना चाहिए और अगर यह इसके अलावह किसी और दीन में है जिसकी तुमने ईजाद की है तो हमें भी हमारा हक मिलना चाहिए नहीं तो यह तुम्हें हज़म नहीं हो सकता।¹

मगर तारीख़ नहीं बताती कि मुआविया ने इस माल को कभी वापस किया हो या हतात के वुरसा(वारिसों) को इसका मुआविज़ा दिया गया हो। इसके अलावा और बहुत सी बातें ख़िलाफ़े शरीयत रिवाज पा रही थीं।

मसलन मुआविया ने ज़काते फ़ितरा के मुतअल्लिक कहा, हमारी राय में ज़काते फ़ितरा दो मुद (एक तरह का पैमाना) समरा शाम हैं यानी शाम के गेहूँ दो मुद। अबू सईद ख़दरी ने फ़रमाया यह मुआविया की मुकरर करदा मिक्दार है। हम न इस पर अमल करते हैं और न इसे कुबूल करते हैं। हम अहदे रसूल^{स0अ0} में हर एक छोटे बड़े और गुलाम व आज़ाद की तरफ़ से ज़काते फ़ितरा एक साअ् गन्दुम, (यानी दो सौ चौतीस 2.34 तोला वज़न) एक साअ् पनीर या जौ या ख़ुज़ूर या मुनक्का, इसी तरह निकालते रहे यहाँ तक कि जब मुआविया हज के लिए आये तो उन्होंने कहा हमारी राय में दो मुद गन्दुमे शाम ज़काते फ़ितरा है। अबू सईद ख़दरी का

¹असदुल गाबा जि/1, पेज/379

कौल है कि मैं जब तक ज़िन्दा हूँ कभी मुआविया के इस कहने के मुताबिक अमल न करूँगा। इब्ने जुबैर ने मुआविया की इस राय को सुनकर कहा: ^Mvybeku cly bfley Qkld ckn^M यानी ईमान लाने के बाद फ़ासिक होना बहुत बुरा है।² “मिकदारे ज़काते फ़ितरा तो बस साअ ही है।²

मिकदाम बिन मअदी कर्ब की गुप्तगू जो मुआविया से हुई है उसमें उन्होंने कहा तुम ही खुदा की कसम। बताओ, क्या रसूल^{स0अ0} ने नहीं फ़रमाया है कि सोना पहनना हARAM है। मुआविया ने कहा सही है। फिर मिकदाम ने कहा क्या आँहज़रत^{स0अ0} ने दरिन्दा जानवरों की खाल पर बैठना और उनका पहनना ममनूअ़ करार नहीं दिया था? मुआविया ने कहा, हाँ यह भी सही है। मिकदाम ने कहा, फिर क्या बात है कि मैं यह सब चीज़ें तुम्हारे घर में देखता हूँ? इसके अलावा शरीयते इस्लाम का हुक्म है कि पेशाब या पायखाने के वक़्त रू—ब—किब्ला या पुश्त ब—किब्ला बैठना जाएज़ नहीं है। हज़रत अबू एय्यूब अन्सारी जब शाम में पहुँचे तो तमाम पायखाने के मुकामात को रू—ब—किब्ला पाया उन्होंने इस्तिग़फ़ार पढ़कर मुंह फेर लिया।³

अरफ़ा के रोज़ (हज के दिन) हज में तलबिया कहना लब्बैक अल्लहुम्मा लब्बैक ला—शरीक ल—क—लब्बैक। ज़रूरी और लाज़िमी शआएरे (निशानी) हज में से है। रसूले करीम^{स0अ0} और असहाब बराबर कहते चले आये मगर इस नेक काम को मुआविया तर्क करते हैं और लोगों को इससे मना करते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास ने सईद से अरफ़ा के रोज़ पूछा कि क्या वजह है मैं लोगों से तलबिया की आवाज़

नहीं सुनता। सईद ने कहा कि लोग मुआविया से डरते हैं। यह सुनकर इब्ने अब्बास अपने खैमे से निकले और पुकारे लब्बैक अल्लहुम्मा लब्बैक और कहा। अगरचे यह मुआविया के लिए अलज़्ज़ोम (ज़िल्लत का सबब हो) इन लोगों ने अली^{अ0स0} की अदावत से इस सुन्नत को तर्क कर दिया है। इस तरह की तीन रिवायतें कन्जुल उम्माल में दर्ज हैं, जिनमें इब्ने अब्बास ने बद—दुआ दी है इस बात पर कि अरफ़ा के रोज़ तलबिया कहने से इसलिए मना करते हैं कि अली अरफ़े के रोज़ तलबिया फ़रमाया करते थे।

हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ0स0} से यह कद (हसद) और ज़िद बहुत से सिनन व अहकाम में तरमीम का बाइस हो गई। चुनानचे इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी लिखते हैं कि हज़रत अली^{अ0स0} नमाज़ में बिस्मिल्लाह बलन्द आवाज़ से कहने पर जोर देते थे। इसलिए जब बनी उमय्या को इक़तेदार हासिल हुआ तो उन्होंने बलन्द आवाज़ से बिस्मिल्लाह कहने की मुमानिअत पर जोर दिया सिर्फ़ इस कोशिश में कि हज़रत अली^{अ0स0} के आसार बाकी न रहें।⁴ मदीने में मुआविया ने लोगों को नमाज़े इशा बा—जमाअत पढ़ाई तो न बिस्मिल्लाह पढ़ी और न बाज़ तकबीरें कहीं। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो जमाअते मुहाजरीन व अन्सान ने शोर मचाया कि तुमने नमाज़ में अमदन चोरी की है या भूल गए हो? बिस्मिल्लाह और सज्दे में जाते हुए तकबीरें कहाँ गई? मगर मुआविया ने कोई परवाह नहीं की और उस नमाज़ का ऐआदा नहीं किया।⁵ (दोबारा नहीं पढ़ी)।

इसके साथ ही बुख़ारी और मुस्लिम दोनों के

² दरासातिल लबीब मुल्ला मोहम्मद मुईन पेज/77

³ दरासातिल लबीब पेज/139

⁴ तपसीर कबीर जि/1, पेज/107

⁵ कन्जुल उम्माल जि/2, पेज/210

यहाँ यह रिवायत मौजूद है कि इमरान बिन हसीन ने हज़रत अली^{अ०स०} के साथ बसरा में नमाज़ पढ़ी और ख़त्मे नमाज़ के बाद कहा कि उन्होंने हमको वह नमाज़ याद दिलाई जो हम रसूल अल्लाह के साथ पढ़ते थे। फिर ज़िक्र किया कि अली^{अ०स०} जब सजदे से उठते थे और जब सजदे में जाते तो तकबीर कहते थे।⁶

नीज़ मुतरफ़ बिन अब्दुल्लाह का बयान है कि मैंने और इमरान बिन हसीन ने अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} के पीछे नमाज़ पढ़ी। पस जब अली सज्दा करते थे तो तकबीर कहते थे और जब सजदे से सर उठाते थे तो भी तकबीर कहते थे और जब दो रकअतों के बाद उठते थे तो तकबीर कहते थे। पस जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो इमरान ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा, बेशक उन्होंने हमको हज़रत रसूल^{स०अ०} की नमाज़ याद दिला दी या यह अलफ़ाज़ कहे कि उन्होंने हमको हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा^{स०अ०} वाली नमाज़ पढ़ाई।⁷ इन ही बातों का नतीजा था कि असहाबे रसूल^{स०अ०} रोते थे और अफ़सोस करते थे। चुनौनचे बुख़ारी की रिवायत है कि एक रोज़ अबुल दर्दा गुस्से में भरे घर में आये, सबब दरियाफ़्त किया गया तो कहने लगे कि मैं उन लोगों में उम्मत मोहम्मद होने की कोई निशानी नहीं पाता। सिवा इसके कि नमाज़ जमाअत से पढ़ लेते हैं। इमाम मालिक ने रिवायत की है कि जो बातें हम पहले पाते थे उनमें से एक बात भी अब हम नहीं देखते, ब—जुज़ इसके कि अज़ान दे लेते हैं, और ज़हरी बयान करते हैं कि मैं अनस बिन मालिक के पास दमिशक़ गया तो उनको रोते पाया। सबब पूछा तो अनस ने

कहा कि जो बातें मैंने अहदे रसूल अल्लाह^{स०अ०} में देखी थीं। अब उनमें से सिवा इस नमाज़ के कोई नज़र नहीं आती और यह नमाज़ भी जाया (बदबाद) कर दी गई है।⁸

अमीरे शाम के यहाँ गाने वालों की क़द्र व मन्ज़िलत होती थी। चुनौनचे सायब फ़ासिर ने जो एक फ़ासिक़ व फ़ाजिर षरख़्स था उन्हें गाना सुनाकर अपनी तमाम हाजतें जो लेकर आया था पूरी करा लीं।⁹

इस आगाज़ का अन्जाम अगर यज़ीद की शराबख़्वारी और रक्सो सुरूर के साथ फ़रेप्तगी (दीवानगी) की षक्ल में जाहिर हो तो तारीख़ की तबई (बुराई) रफ़तार के लिहाज़ से काबिले तअज्जुब नहीं है।

अल्लामा इब्नुल फ़कीह ने लिखा है कि मुआविया ने सबसे पहले पुलिस चौकी और पहरदार मुकर्रर किये और ख़्वाजा सरा बनाये और अमवाल ख़ज़ाने में जमा करके रखे।¹⁰ उन्होंने सलातीन (बादशाह) रोज़गार की तरह अपने उम्माल (सरकारी मुलाज़िम्) के ज़रिये से नौरोज़ और महरगान (ईरानी त्योहार) के तहाएफ़ वसूल किये जिनकी मिक़दार एक करोड़ दिरहम सालाना तक पहुंची।¹¹

मज़क़ूरा—ए—बाला वाक़ेआत में से मुमकिन है कि बाज़ हैरत में डालने वाले हों मगर इसको क्या किया जाये कि तारीख़ में इससे ज़्यादा हैरत अंगेज़ बातें भी दर्ज हैं जिनको देखकर हर इन्सान यह नतीजा निकाल सकता है कि अबू सुफ़ियान की औलाद को बनी हाशिम से एक मौरुसी अदावत (ख़ानदानी दुश्मनी) जो थी उसकी बिना पर वह उनकी हर सुन्नत, हर रस्म और हर तरीक़े को फ़ना कर देना चाहते

⁸ सही बुख़ारी जि/1 पेज/65

⁹ तारीख़े तबरी जि/6 पेज/188 ¹⁰ अल—बुल्दान पेज/109

¹¹ अल वुज़रा वल किताब पेज/15

⁶ बुख़ारी जि/1, पेज/91

⁷ बुख़ारी जि/1, पेज/91.96, मुस्लिम जि/1, पेज/169

थे बल्कि सिरे से इस्लाम ही को नीस्तो नाबूद कर देने के दरपै थे। सिर्फ मजबूरी यह थी कि उनकी हुकूमत इस्लाम की बिना पर थी इसलिए उन्हें पैगम्बर इस्लाम^{स०अ०} की नुबूअत का इन्कार मुमकिन न था लेकिन वह फिर भी हज़रत की अज़मत के एहसास और उसके असरात के कायम रखने का कोई जोश व वलवला न रखते थे। इसकी एक अदना मिसाल यह है कि मुआविया को शौक पैदा हुआ एक बड़े मुअम्मर (जईफ़) आदमी से मुलाकात का जो गुज़िश्ता ज़माने के हालात बयान करे। लोगों ने कहा कि हज़रमूत (एक जगह का नाम) में एक शख्स है जिसकी तीन सौ साठ बरस की उम्र है। मुआविया ने उस के पास आदमी भेजे और उसे बुलवाया। जब वह आया तो पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? उसने कहा कि अबद बिन अबद। मुआविया ने उससे अब्दुल मुत्तलिब और उमैया वगैरह के हालात पूछे। फिर कहा तुमने मोहम्मद^{स०अ०} को भी देखा है? उसे एक मुसलमान की ज़बान से हज़रत का नामे नामी इस तरह सुनकर हैरत हुई और उसने कहा व मन मुहम्मद यानी “मोहम्मद कौन? उन्होंने कहा “वही रसूल अल्लाह” उसने कहा फिर तुमने पहले ही उनका नाम इस शान के साथ क्यों न लिया? जिसका खुदा ने उन्हें मुस्तहक़ करार दिया है। यह क्यों नहीं कहा कि तुमने रसूल अल्लाह को देखा है।¹²

इससे ज़्यादा और इन्तेहाई हैरत खेज़ यह है कि मुआविया को रसूल अल्लाह^{स०अ०} कह कर सलाम किया गया और उनको सज़ा तो दरकिनार मामूली सी तन्बीह भी नहीं की गई। इस वाक़ये की तफ़सील यह है कि अम्र बिन आस एक दफ़ा अहले मिस्र की एक जमाअत

¹² किताबुल मुअम्मरीन पेज/87, व असदुल गाबा जि/1, पेज/115

के साथ मुआविया के पास दारुल ख़िलाफ़ा शाम में बारयाबी (हाज़री) के लिए आये यह वह ज़माना था कि अम्र बिन आस, मुआविया से कुछ बरसरे पुरखाश (नाराज़) थे। उन्होंने अपने साथियों को समझा दिया कि देखो जब तुम मुआविया के दरबार में जाना तो उसे ख़लीफ़ा कह कर सलाम न करना और जहाँ तक मुमकिन हो उससे हिंकारत के साथ बात करना। उसकी वजह से तुम्हारी हैबत उसके दिल पर कायम हो जायेगी। मुआविया को जब उन लोगों के पहुँचने की इत्तेलाअ हुई तो वह अपनी ज़हानत से अम्र बिन आस की साज़िश को ताड़ गए और दरबानों से कहा मेरा ख़याल है कि नाबगा के लड़के (अम्र आस) ने उन लोगों की नज़र में मेरी मन्ज़िलत को घटा दिया होगा। लिहाज़ा तुम ख़याल रखो जब यह लोग आयें तो उनके साथ इन्तेहाई सख्ती करना। यहाँ तक कि हर शख्स को उनमें से यकीन हो जाये कि उसकी जान की ख़ैर नहीं। नतीजा यह हुआ कि सबसे पहले जो शख्स मुआविया के सामने दरबार में हाज़िर हुआ वह यूँ आदाब बजा लाया कि “अस्सलामु अलैका या रसूल अल्लाह” बस फिर क्या था, सब ने उसकी मुवाफ़िक़त की और जो आया उसने मुआविया को रसूल अल्लाह कह कर सलाम किया।¹³

मसल मशहूर है “अन्नासो अला दीने मुलूकेहिम” लोग बादशाहों के तरीक़े पर चलते हैं।” जब हुकूमत की यह रविश हो तो आम अफ़राद की नज़र में रसूल और शरीयते रसूल की क्या इज़ज़त बाकी रह सकती है। जब लोग देख रहे हों कि हुकूमत की तरफ़ से मज़हब का नीलाम कराया जाता है और थोड़े से सिक्कों के एवज़ दीन व मज़हब की ख़रीदारी होती है

¹³ तबरी जि/6, पेज/135, असदुल गाबा पेज/154

तो लोगों की निगाह में मज़हब की क्या वृक़अत बाकी रह सकती है?

वाक़ेया यह है कि हत्तात मज़ाशई, ज़ारिया बिन कुदामा, अहनफ़ बिन कैस और जौन बिन क़तादा चारों आदमी मुआविया के पास आये। मुआविया ने हर एक को एक एक लाख दिरहम दिये मगर हत्तात को सत्तर हजार दिरहम दिये। हत्तात को जब इसका इल्म हुआ तो मुआविया से आकर इसकी शिकायत की। मुआविया ने कहा कि उन लोगों से मैंने उनका दीन ख़रीद किया है। हत्तात ने फिर कहा, फिर मुझसे भी मेरा दीन ख़रीद लीजिये।¹⁴ अब जो ज़रा भी खुदा तरस मुसलमान थे वह ज़िन्दगी से आजिज़ हो गए थे। चुनानचे हेकम बिन अम्र ग़फ़ारी ने जो यमन व ख़ुरासान के हाकिम बनाये गए थे जब 50 हिजरी में एक जंग के बाद अमवाले ग़नीमत (जंग में जीता हुआ माल) हासिल किये और यह हुक्म नामा पहुँचा कि लूट के माल को सिपाहियों में तक्सीम करने के बजाये तमाम नक़द व जिन्स ख़ज़ान-ए-सरकारी में भेज दिया जाये तो उन्होंने हिम्मत करके यह जवाब लिख दिया कि यह हुक्म कुरआन के बिल्कुल ख़िलाफ़ है इसलिए मैं अमल करने से कासिर हूँ। मगर उसके बाद इतना ख़ौफ़ हुआ कि खुदा से दुआ की। बरे इलाहा अब मुझे ज़िन्दगी दरकार नहीं है। मेरी रुह क़ब्ज़ फ़रमा ले। उसके बाद उनका इन्तेक़ाल हो गया।¹⁵

आसारे बनी हाशिम के मिटाने की सई (कोशिश) तामीरी यादगारों तक भी पहुँची। चुनानचे जब मुआविया ने हज किया तो वापसी में मदीने भी गए। और मिमबरे रसूल को उसकी जगह से

हरकत दी। चाहते थे कि उसे शाम ले जायें उसी वक़्त सूरज को गहेन हुआ। जाबिर बिन अब्दुल्लाहे अन्सारी ने कहा, मुआविया ने रसूल अल्लाह के शहर और उनके दारुल हिजरत (हिजरत के घर) में बड़ा हादिसा रूनुमा (ज़ाहिर) किया। ज़रूर यह किसी मुसीबत में मुब्तिला होंगे। उसी साल मुआविया लक़वह में मुब्तिला हुए।¹⁶

यह सन 50 हिजरी का वाक़ेया है मिमबर को जुम्बिश देते ही सूरज में गहेन लगा ऐसा कि तारे नज़र आने लगे। अहले मदीना में इससे इतना हैजान पैदा हुआ कि मुआविया को अपना इरादा तर्क करना पड़ा और कहा कि मैंने तो मिमबर हटा कर सिर्फ़ यह देखना चाहा था कि उसे दीमक तो नहीं लगी है।¹⁷ हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} के साथ जो दुश्मनी थी वह भी आपकी ज़ात से खुसूमत (कीना) की बिना पर न थी बल्कि सिर्फ़ इसलिए कि आप बनी हाशिम के चश्मो चिराग़ और उसूले इस्लाम के अलम बरदार थे। इसलिए सियासत का तकाज़ा यह था कि मुल्क में आपके ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा कराई जाये। क़त्ले उसमान का इल्ज़ाम भी फ़क़त इस सियासत के पूरा करने का एक बहाना था। चुनानचे अल्लामा इब्ने हजर मक्की ने लिखा है। मरवान बिन हेकम की ज़बानी मन्कूल है। उसने कहा कि कोई शख्स अली से ज़्यादा उस्मान की हिमायत करने वाला न था। किसी ने कहा कि फिर तुम लोग मिम्बरों पर उन्हें गालियाँ क्यों देते हो? उसने कहा बग़ैर इसके हमारा इक्तेदार कायम नहीं हो सकता।¹⁸

¹⁴ तबरी जि/6, पेज/135, इस्तीआब जि/1, पेज/154, असदुल

गाबा जि/1, पेज/379

¹⁵ तबरी जि/6, पेज/140-141

¹⁶ किताबुल बुलदान पेज/24

¹⁷ तबरी जि/6, पेज/133

¹⁸ सवाएके मुहर्रिका पेज/33

फिर जबकि सुल्हनामे की बुनियाद यानी किताब और सुन्नत की मुवाफिकत (साथ चलने) वाली शर्त का यह अन्जाम हुआ तो दूसरी शर्तों का नतीजा ज़ाहिर है। चुनौतियों की दूसरी शर्त यह कि मुआविया को अपने बाद किसी के नामज़द करने का हक़ न होगा, इसके अन्जाम का आइन्दा एक मुस्तक़िल बाब में बयान होगा। तीसरी शर्त यह थी कि शाम व इराक़ व हिजाज़ (आज का सऊदी) व यमन सब जगह के लोगों के लिए अमान होगी। इसका अन्जाम बहुत दर्दनाक है। इराक़ में ज़ियाद बिन सुमैया के हाथों जो ख़ूँरजियाँ हुईं वह सफ़ह-ए-तारीख़ पर नुमायाँ हुरूफ़ में दर्ज हैं। उस शख्स के खुसूसियात में लिखा है कि वह जुर्म के पहले सज़ा देता, बदगुमानी की बिना पर बिला तहकीक़ व तफ़्तीश कैद कर देता। और शुबहा (शक) पर ईज़ा रसानी (तकलीफ़ देना) करता था। इन्सान की जान लेना उसके नज़दीक़ कोई बात ही न थी। उसका एक अजीब नमूना इस वाक़ये में है कि उसने यह आम हुक्म दे दिया था कि जो निस्फ़ शब (आधी रात) के करीब गली कूचे में नज़र आये उसको क़त्ल कर दिया जाये। एक रात एक देहाती अरब को गिरफ़्तार किया गया और उसे ज़ियाद के पास लाये। उसने अपनी सफ़ाई पेश की कि मैं यहाँ का रहने वाला नहीं हूँ। देहात से आज ही आया हूँ और मुझे आपके इस हुक्म की इत्तेला (जानकारी) नहीं थी। ज़ियाद ने कहा कि वल्लाह मेरे ख़याल में तू सच कह रहा है और बे ख़ता है मगर तेरे क़त्ल कर देने में आम्म-ए-ख़लाएक़ (तमाम लोग) के लिए बेहतरी है चुनौतियों की फ़ौरन उसे क़त्ल कर दिया गया।¹⁹

ज़ियाद की विलायत कूफ़ा के बाद बसरा में

¹⁹ तबरी जि/6, पेज/126

उसके जानशीन समरा बिन जुन्दब के मज़ालिम उससे भी ज़्यादा थे। एक बार छे: महीने की मुद्दत में आठ हज़ार आदमी उसने तहेतेग़ किये। अबू सवार अददी का बयान है कि सुमरा ने मेरी क़ौम में से एक दिन में 47 आदमी क़त्ल किये जो सबके सब हाफ़िज़े कुरआन थे।

एक दिन सुमरा अपने लावलशकर के साथ षहर से बाहर निकला। बनी असद के मकानों के करीब एक शख्स उस कबीले का किसी ज़रूरत से एक गली में से निकला। लशकर के आगे आगे के सवारों में से एक ने उसे देखते ही अपने हरबे से हमला कर दिया और वह गिर कर खाक व खून में तड़पने लगा। सुमरा बिन जुन्दब उसकी लाश पर से गुज़रा और वाक़ेया मालूम होने पर कहा कि जब हमारी सवारी गुज़रा करे तो हमारे नैज़ों से बचते रहा करो।²⁰

मुस्लिम अजली का बयान है कि एक शख्स सुमरा के पास आया और अपने माल की ज़कात अदा की। फिर मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ना शुरू की। इतनी देर में एक शख्स आया और उसकी गर्दन उड़ा दी। इस तरह कि मस्जिद में एक तरफ़ उसका सर कट कर जा गिरा और दूसरी तरफ़ बदन। एक दूसरे मौक़े पर मुशाहिदा बयान किया है कि बहुत से आदमी इस तरह क़त्ल किये गए कि उनसे शहादतैन (दो गवाहियाँ) का इकरार लिया जाता था। वह तौहीद और रिसालत का इकरार करते थे और ख़वारिज (दीन से फिरे हुए) से बराअत (बेज़ारी) का एलान करते थे और फिर उसके बाद उनका सर कलम कर दिया जाता था। और यह सब कुछ अमीरे षाम मुआविया की मर्ज़ी के मुताबिक़ होता था।

²⁰ तबरी जि/6, पेज/132

चुनौनचे जब अरसे के बाद मुआविया ने सुमरा को माजूल (हटाना) किया तो उसने कहा, खुदा गारत करे मुआविया को। अगर मैंने अल्लाह की इतनी इताअत की होती जितनी मुआविया की इताअत अन्जाम दी तो वह कभी मुझको अज़ाब न करता।²¹

चौथी शर्त यह थी कि हज़रत अली^{अ०स०} के असहाब और शियों के जान व माल व नामूस व औलाद महफूज़ रहेंगे। इस शर्त पर क़तई अमल नहीं हुआ।

इराक़ में शिअ्याने अली^{अ०स०} पर जितने मज़ालिम हुए उनमें सबसे हल्की बात यह थी कि उनको कूफ़े से जिला वतनी पर मजबूर किया जाता था और उनकी जगह मुआविया के तरफ़दारों को ला कर बसाया जाता था।²²

कूफ़े और बसरा दोनों जगह के शियों को मुल्क बदर कर दिया गया। उनमें से अक्सर को शाम के मक़ाम कन्सरीन में जो बिल्कुल ग़ैर आबाद था ले जाकर फ़ौजी ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर किया गया।²³

हुज़्र बिन अदी और उनके साथी शाम में बुलवाकर क़त्ल कर दिये गए हालाँकि वह ऐलान कर रहे थे कि हम मुसलमान हैं। अपने मुहाएदे पर कायम हैं और बागी नहीं हैं।²⁴

मगर उनका सबसे बड़ा जुर्म यही था कि वह मुहिब्बे अहलेबैत^{अ०स०} थे इसलिए उनके वास्ते न हिल्म (बरदाश्त) में गुन्जाइश थी न रहमो करम उन पर निगाह डालने की इजाज़त देता था। सैफ़ी बिन फ़सील शैबानी जो उन्हीं में से एक मुमताज़ फ़र्द थे। ज़ियाद के पास लाये गए तो ज़ियाद ने पूछा कि तुम अली बिन अबी तालिब के बारे में क्या राय रखते हो? कहा बेहतरीन राय जो अल्लाह के बन्दगाने

मोमिन में से किसी के बारे में रखी जा सकती है। ज़ियाद ने हुक्म दिया कि इसे लकड़ी से पीटो, इतना कि ज़मीन से लग जाये। चुनौनचे उन्हें इतनी ही शिद्दत से ज़दो कूब (मारना, तकलीफ़ पहुंचाना) किया गया। ज़ियाद ने कहा बस करो। फिर पूछा, हाँ अब बताओ अली के बाब में क्या कहते हो। कहा ब—खुदा अगर उस्तुरों और छुरियों से मेरी बोटियाँ काट डालो तब भी वही कहूँगा जो पहले सुन चुके हो। कहा तुझ को उन पर लानत करना होगी। वरना तेरी गरदन उड़ा दी जायेगी। सैफ़ी ने कहा तो फिर पहले गरदन उड़ा ही क्यों न दो, मुझे इसमें कोई उज़्र नहीं बल्कि मैं इससे राज़ी और मुतमइन हूँ।²⁵

ज़ियाद ने बारह आदमियों को पा—ब—जंजीर शाम की तरफ़ रवाना किया।²⁶

1, हुज़्र बिन अदी कन्दी, 2, अरक़म बिन अब्दुल्लाह कन्दी, 3, शरीक बिन शद्दाद हज़रमी, 4, सैफ़ी बिन फ़सील, 5, क़बसिया बिन ज़बीआ अबसी, 6, करीम बिन अफीफ़ ख़सअमी, 7, आसिम बिन औफ़ बिजली, 8, वरका बिन समी बिजली, 9, कुदाम बिन हयात ग़ज़ी, 10, अब्दुर्रहमान बिन हिसान ग़ज़ी, 11, महरज़ बिन शहाब तमीमी, 12, अब्दुल्लाह बिन हविया सअदी।

अतबा बिन अख़नस सादी और सअद बिन नमरान हमदानी, इन दो आदमियों को ज़ियाद ने बाद में भेजा जिसके बाद उनकी तादाद चौदह हो गई।²⁷

उनमें से सात आदमी मुख़तलिफ़ लोगों की सिफ़ारिश पर छोड़ दिये गए और छे: आदमियों को मक़ामे मरज अज़रा में तहेतेग़ (क़त्ल) किया गया।²⁸

²¹ तबरी जि/6, पेज/164

²² तबरी जि/3, पेज/240

²³ तबरी जि/4, पेज/260

²⁴ तबरी जि/6, पेज/148,153

²⁵ तबरी जि/6, पेज/149

²⁶ तबरी जि/6, पेज/144

²⁷ तबरी जि/6, पेज/152

²⁸ तबरी जि/6, पेज/154

एक शख्स अब्दुर्रहमान बिन हिसान गज़ी के लिए मुआविया को खुद अपनी बेरहमी नाकाफी महसूस हुई और उनको फिर ज़ियाद के पास भेज दिया। इस इन्तेबाह (ख़बरदार) के साथ कि यह उन लोगों में सब से ज़्यादा शिर्इय्यत में सख्त है। तुम उसको बद से बद तरीका जो इख़्तियार कर सको उस तरह क़त्ल करो चुनौनचे ज़ियाद के हुक्म से उन्हें ज़िन्दा ज़मीन में दफ़न कर दिया गया।²⁹

हुज़्र बिन अदी उनमें से थे जो मरजे अज़रा में क़त्ल किये गए। उनको आलमे इस्लाम में कितनी हरदिल अजीजी थी। इसका अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि जब ज़ियाद की मुखबिरी की इत्तेला उम्मुल मोमिनीन आइशा को पहुँची तो उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हिशाम को हस्बे ज़ैल (नीचे लिखे हुए) पैगामात के साथ मुआविया के पास रवाना किया। “अल्लाह अल्लाह फी हुज़्र व असहाबेही” यानी हुज़्र और उनके असहाब के बारे में खुदा का ख़ौफ़ करना, मगर अफ़सोस है कि अब्दुर्रहमान उस वक़्त पहुँचे जब हुज़्र अपने साथियों समेत क़त्ल हो चुके थे। अब्दुर्रहमान ने मुआविया से कहा, आपके पास से कहाँ चला गया था, अबू सुफ़ियान से मीरास में मिला हुआ हिल्म? आपने उस हिल्म से काम क्यों न लिया? आपने उनको जेल ख़ाने ही में डाल दिया होता और वबा व ताऊन (Plage) से हलाक हो जाने दिया होता। मुआविया ने तन्ज़िया तौर पर जवाब दिया कि तुम्हारे ऐसा कोई मशवरा देने वाला मौजूद न था। अब्दुर्रहमान ने कहा। अब ब—खुदा अरब में न तो आपके हुक्म का कोई ज़िक्र होगा और न आपकी इसाबते राय (ठीक राय) काबिले तस्लीम रही। आपने ऐसे आदमियों को क़त्ल

²⁹ तबरी जि/6, पेज/155

किया जिनको कैद करके आपके पास भेजा गया था और वह मुसलमान थे।

आएशा को इस हादिसे की इत्तेला पहुँची तो उन्होंने कहा: “अगर मुआविया को एहसास होता कि अहले कूफ़ा में कुछ भी ज़ुरअत व हिम्मत है तो वह कभी हुज़्र और उनके असहाब को गिरफ़्तार कराके शाम बुलवाने और क़त्ल करने की ज़ुरअत न करता। लेकिन जिगर ख़्वारा के लड़के को मालूम है कि आदमी फ़ना हो चुके हैं। खुदा की कसम यह लोग अपनी इल्मी लियाक़त और फ़िक्ही काबिलियत के लिहाज़ से अरब के सर और दिमाग़ समझे जा सकते थे। लुबीद शायर ने क्या ख़ूब नज़्म किया है अपने दो शेअरों में जिनका मज़मून यह है कि गुज़र गए वह लोग जिनकी पनाह में ज़िन्दगी बसर की जा सकती थी और रह गया हूँ मैं ऐसे पस मान्दा (दबे कुचले) अफ़राद में जो ख़ारशी (खुजली वाले) ऊँट की खाल के मिस्त हैं। न तो उनसे कोई फ़ायदा है और न उनसे किसी अच्छाई की तवक्को है जब वह बात करते हैं तो उयूब से ममलू (ख़राबियों से भरी) होती है चाहे वह शोरो गुल बर्पा न करें।

जब मुआविया मदीन—ए—रसूल में आये और उम्मुल मोमिनीन आएशा के पास सलाम के लिए हाज़िर हुए तो सबसे पहली बात जो आएशा ने पेश की वह हुज़्र का मुआमला था और उस गुफ़्तगू में यहाँ तक तूल हुआ कि मुआविया ने कहा, अच्छा फिर छोड़ दीजिये, मुझे और हुज़्र को, खुदा के यहाँ देखा जायेगा। अब्दुल्लाह बिन उमर का वाक़ेया है कि वह बाज़ार में थे। उनको हुज़्र के क़त्ल की ख़बर मिली तो वह बेचैन हो गए। नशिस्त कायम न रख सके और खड़े हो कर चीखें मार मार कर रोने लगे। ﷻ

5& t | e h j d h v k o k t | v k j r d j k j v e y

किसी काम का बराबर दोहराते रहना जिससे आदत की तशकील होती है इससे भी ज़मीर की फ़आलियत और कुव्वते कार कारदगी पर असर पड़ता है, जो लोग पै-दर-पै अपने ज़मीर के तकाज़ों के खिलाफ़ काम अंजाम देते रहते हैं, आखिर में उनका ज़मीर उन्हें न कोई मलामत करता और न इस ग़लत फ़ेल की अंजाम देही से बेचैन होता है। ज़राईम पेशा अशखास बराबर ज़राईम के मुर्तकिब होते रहते हैं और उनके ज़मीर उनसे किसी किस्म की बाज़पुर्स नहीं करते, ऐसे कोहनाकार सियासत दानों की कमी नहीं है जो अपने इक्तेदार के तहफ़फ़ुज़ की खातिर ऐसे-ऐसे हौलनाक इक्दामात करते जिन्हें सुनकर हमारे जिस्म पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दिल हिला देने वाले खूनी मनाज़िर उनकी आंखों के सामने आते, लेकिन उनका इतमीनान व सुकून बताता है कि ज़मीर के दबाओ की वजह से किसी बातिनी बेचैनी को वह महसूस नहीं कर रहे हैं। इस बहिसी का सबब यही है कि तक़रारे जुर्म और फ़ैसलए ज़मीर की तरफ़ से बे ऐतेनाई ने इस मफ़ादी हक़ को ख़ामोश कर दिया।

ज़मीर भी दूसरी रूहानी और जिस्मानी कुव्वतों की तरह बेकार रहने से रफ़ता-रफ़ता हो जाता है। गहरे तारीक़ ग़ारों में ऐसे जानवर मिलते हैं जिनकी आंखें काम नहीं करतीं। नेचुरल साईन्स के माहेरीन कहते हैं कि यह जानवर अपने अब्बल रोज़ ख़िलक़त से ऐसे

नहीं हैं, उनकी आंखों में बीनाई मौजूद थी, वह पहले उन ग़ारों से बाहर रहते थे, ज़रूरयाते ज़िंदगी की तलाश ने जब उन्हें अंधेरे ग़ारों में ढकेल दिया तो बेकार रहने की वजह से रफ़ता-रफ़ता उनकी आंखों की रोशनी रूख़सत हो गई और वह अंधे हो गए। इसी तरह वह मुजरिम जिन्हें कैदे तनहाई की सज़ा भुगतना पड़ती है। चूंकि उन्हें चलने फिरने का मौका नहीं मिलता। लिहाज़ा आज़ाद होने के बाद एक मुद्दत तक वह चलने फिरने से आजिज़ रहते हैं।

इंसानी ज़मीर का भी यही मुअमिला है कि जब उसकी आवाज़ पर लब्बैक नहीं कही जाती तो तदरीजन इसकी सदा में जोफ़ व इज़मेहलाल पैदा होता रहता यहां तक कि वह एक वक़्त में बिल्कुल साकित हो जाता है। इसके बरअक्स जब इंसानों को अच्छे कामों के अंजाम देने की आदत पड़ जाए तो उनके तर्क करने से उनका ज़मीर इन्तेहाई तकलीफ़ महसूस करता है। जिन्हें बा जमाअत अब्बल वक़्त नमाज़ पढ़ने की आदत है, अगर वह किसी वजह से अपने वक़्त पर नमाज़ न पढ़ें तो उन्हें क़ल्बी अज़िय्यत होती है। ग़लत कामों का इर्तेकाब करते-करते जिन अफ़राद को ज़राईम की आदत पड़ गई उनके ज़मीर मुर्दा हो चुके। अब राहे रास्त की तरफ़ उन्हें कौन मुतावज्जे करेगा?

6& t | e h j H k h / k k [k k [k k r k g

अक्सर इंसान अपने ज़मीर को खुद धोका देता है। अपनी अक्ल व फ़िक्क की गहराईयों

में किसी काम की बुराई का यकीन रखते हुए महज़ अपने ज़मीर की सरज़निश से बचने के लिए उस फ़ेल की दूर अज़कार तावीलें तराशनता है। ऐसा ज़ाहिर करता है कि मेरी नज़र में यह फ़ेल बिल्कुल सही और पसंदीदा है।

हमारे इर्द-गिर्द सैंकड़ों ग़लत, ना माकूल अफ़आल अंजाम दिये जाते रहते हैं जिनके मुरतकेबीन अपने ज़मीर की सरज़निश से बचने की खातिर मुख्तलिफ़ मज़हका खेज़ उज़र किया करते हैं। बहुत अफ़राद ऐसे मौजूद हैं कि अगर उनसे दरयाप्त किया जाता है कि तुम चोरी क्यों करते हो तो जवाब में कहेंगे कि इस मुल्क में कौन है जो किसी न किसी तरह चोरी नहीं करता है?

फ़रमाईये, इस किस्म के अफ़राद का ज़मीर उन्हें राहे रास्त का पाबंद बना सकता है? यकीनन उनका ज़मीर ख़्वाबे ग़फ़लत में है, उसे थपकियां दे-देकर सुला दिया गया है, ज़मीर खुफ़ता किसी किस्म की हिदायत पर कादिर नहीं है।

7& n1j j1tgkukr vkj t1hj d1njfe;ku r1kne

होशियार और बेदार ज़मीर की तासीर का कोई साहिबे अक्ल इन्कार नहीं कर सकता। यकीनन ज़मीर इंसान की आज़ादी और मुतलकुल एनानी पर पाबंदी आईद कर सकता, इसके किरदार की निगरानी पर कुदरत रखता है लेकिन ऐसा नहीं है कि उसे इंसान के आसाब पर इतना क़वी तसल्लुत हासिल हो कि जिधर वह चाहे इंसान के रुख़ को मोड़ दे, जिस रास्ते पर चलाना मुनासिब समझे इंसान को हाथ पकड़ के उस रास्ते पर गामज़न कर दे।

ज़मीर की आवाज़ से मुतासादिम दूसरे फ़ितरी रूजहानात की मुख्तलिफ़ आवाज़ें हैं। एक

तरफ़ ज़मीर अपने पसंदीदा रास्ते पर इंसान को चलाना चाहता, दूसरी तरफ़ खुद परस्ती, जाह तलबी, जिनसी ख़्वाहिश, माल व दौलत से मुहब्बत अपने तकाज़ों को इंसान से पूरा कराना चाहती है। इस कशमकश में ज़रूरी नहीं है कि फ़तहा हमेशा ज़मीर ही को हासिल हो। अकसर इंसानी ज़मीर दूसरे फ़ितरी जज़बात से लड़कर शिकस्त खा जाता है।

वह जवान कि जिसे हवा व हवस की सरकशी ने इफ़त व शराफ़त के रास्तों से मुहरिफ़ बना दिया है, ऐसा नहीं है कि उसका ज़मीर मुर्दा हो चुका हो, ज़मीर ज़िन्दा और बेदार है, अपनी राहनुमाई के फ़रीजे को हर-हर नुक्ते पूरा कर रहा है लेकिन ज़िन्सी जज़बात ज़मीर से ज़ियादा ताक़तवर हैं। लिहाज़ा उन्होंने ज़मीर की आवाज़ को बे असर बना दिया है।

जिन लोगों को ज़ियादा से ज़ियादा दौलत मुहय्या करने की फ़िक्र है हम देखते हैं कि वह कैसे-कैसे पस्त और रकीक आमाल के मुरतकिब होते हैं, फ़रेब देही, मक्कारी, दरोग़ गोई, ग़लत बयानी किसी बात में वह बंद नहीं हैं। दूसरे के फ़क्द व एहतियाज से फ़ाएदा उठाना उनका मुस्तक़िल मशग़ला है। क्या उनके ज़मीर मुर्दा हो चुके हैं? ऐसा नहीं है, ज़मीर ज़िन्दा हैं और उनके अफ़आल पर उन्हें मलामत भी करते हैं लेकिन हुब्बे माल का जज़बा ज़मीर की आवाज़ की तरफ़ मुतावज्जे नहीं होने देता।

आज ही नहीं हर ज़माने में साहिबाने इक्तेदार ने अपने तसल्लुत को बर क़रार रखने के लिए इंतेहाई हौलनाक हरबे इस्तेमाल किए हैं। इस सिलसले में हमेशा से इंसानी खून की नदियां बहती रहती हैं, महे मकाबिल के ख़ाक व खून में तड़पते हुए लाशों ने

उनकी आंखों को कभी अशकबार नहीं बनाया बल्कि इसके बर अक्स उनकी आंखों में मुसर्त व इम्बेसात की दरखशिंदगी, उनके लबों पर फ़तहो कामरानी की मुस्कुराहट देखी गई है। वह सियासी लीडर ही क्या जो अपने हरीफ़ को उसकी ज़िंदगी ख़त्म करके मैदाने मुकाबिल से न हटा सके। सियासत की दुनिया में कौन सा मज़हबी और इख़लाकी बड़े से बड़ा जुर्म है जिसका खुफ़िया या ऐलानिया इस्तेकाब नहीं किया जाता। क्या वाक़ियन उन सियासत दानों की दिमाग़ों की रूआम उकूल व अफ़कार की रू से मुख़तलिफ़ है? क्या उनके ज़मीरों के तकाज़े दूसरे के ज़मीर के मुतालिबों से जुदागाना हैं? नहीं ऐसा नहीं है। हकीक़त में उनके जज़बए जाह परस्ती ने अक्ल व ज़मीर पर तसल्लुत पा लिया है। अक्ल व ज़मीर मग़लूब, मफ़तूह हो चुके हैं, उनकी आवाज़ों को दबा दिया गया है।

ज़मीर की हकीक़त और उसके तास्सुरात के मताल्लिक़ जो हमने तवील बहस की उसको सामने रखते हुए यह अमर बिल्कुल वाज़ेह हो जाता है कि जो लोग इसके मुद्दई हैं कि ज़मीर मज़हब की जगह को पुर कर सकता है वह न पूरे तौर से मज़हब को पहचानते हैं और न ज़मीरे इंसानी को उन्होंने इंसान की इफ़ेरादी और इजतेमाई ज़िंदगी में न मज़हब की अफ़दियत को समझा है और न ज़मीर के दाएरए असर को।

मज़हबे इंसानी ज़िंदगी के जिन गोशों और पहलुओं को सामने रखते हुए ज़रूरी है ज़मीर उनमें से किसी गोशे को पुर नहीं कर सकता।

ख़िलक़ते इंसानी का मक़सद यह है कि वह इल्मी और अमली हैसियत से तमाम मुमकिन दरजाते कमाल तक जाए। इस मक़सद के हासिल करने के लिए सही तरीन और इंतेहाई

जामे तालीमात की ज़रूरत है। इंसानी उलूम नाकिस और आमाजगाहे ख़ता होने की वजह से इंसान को उसकी मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुंचा सकते। सिर्फ़ पैग़म्बरों के तालीमात के साए में हमारे लिए यह मुमकिन है कि एक तरफ़ अपने मालूमात की कमी को दूर करें और दूसरी तरफ़ अपने ग़लत और ख़िलाफ़े वाक़े नज़रियात की इसलाह की जानिब मुतावज्जे हों। ज़मीर को मज़हब की जगह बिठाने वालों से हम दरियाफ़्त करते हैं कि क्या ज़मीर इंसान की इफ़ेरादी और इजतेमाई इस्लाह के लिए अपने पास सही और जामे उलूम का कोई ज़ख़ीरा रखता है?

यकीनन हमारे सवाल का जवाब नफ़ी में दिया जाएगा। क़तअन ज़मीर के पास इल्म का कोई ज़ख़ीरा मौजूद नहीं है। वह अपने फ़ैसलों में अक्ल व फ़िक़र का सहारा लेता है। नेक व बद की तअय्युन अक्ल करती है। ज़मीर अक्ल के पैदा करदा इम्तियाज़े नेक व बद के बाद अच्छाईयों के बजा लाने की दावत और बुराईयों से बाज़ रहने का हुक्म देता है। जब कि ज़मीर के पास उलूम का कोई सरमाया मौजूद ही नहीं है तो उसके मुअल्लिम हाने का सवाल नहीं पैदा होता।

सुकरात और अरस्तू का यह ख़याल क़तअन ग़लत है कि अख़लाक़ की पैदाइश इल्म के शिकम से हुई है। इन दोनों का नज़रिया यह था कि हुस्ने अख़लाक़ खुबी और बदी के इल्म का नतीजा है लेकिन हमारे रोज़मर्रा के मुशाहेदात इस ख़याल के बे बुनियाद होने की तरफ़ इशारा करते हैं। हमें बराबर यह नज़र आता है कि लोग ग़लत आदातों, सरकश जज़बात से मग़लूब होकर बहुत से पस्त और रकीक़ अफ़आल के मुरतकिब होते हैं। हालांकि न अफ़आल की रकाक़त और उनके मनहूस

नताईज का उन्हें यकीन होता है।

सही यह है कि हुस्ने अखलाक की तखलीक दो चीजों के ज़रिये होती है, इल्म और फ़ितरी मौलानात। अक्ल एक क़ानून साज़ की हैसियत रखती है अक्ल के बनाए हुए क़वानीन का इजरा और नेफ़ाज़ तिबी मीलानात के हाथों होता है। मुश्किल यह है कि तिबी मीलानात कभी अपने हुदूद व इख़्तियार से बाहर क़दम रख देते हैं। उनकी सरकशी इस हद तक पहुंच जाती है कि अक्ल के पैरों में बेड़ियाँ डाल कर कभी ममलेकते जिस्म पर खुद हुकूमत करने लगते हैं। इसी मुश्किल के हल करने के लिए इंसान को तालीम के साथ तरबियत की भी ज़रूरत है खुश किस्मती और नेक बख़्ती के सही तरीन वसाईल व अस्बाब की राहनुमाई के अलावा तबई मैलानात की सरकशी और सरताबी को दूर करने के लिए कोई इंसान होना चाहिए। कोई कुव्वत हो जो फ़ितरी मैलानात को अक्ल व ज़मीर का हम आवाज़ बना दे। चूंकि तरबियत में इल्मी जम्बे से ज़ियादा अमली जुम्बे को अहमियत है, मुर्बिअे कामिल के लिए अच्छे और बुरे औसाफ़ से पूरी वाकिफ़ियत, ज़ेरे तरबियत अशख़ास के मिज़ाजी और तिब्बी असरार व रूमूज़ पर इत्तेला के अलावा यह भी लाज़िम है कि वह अख़लाक और किरदार के लिहाज़ से एक मुकम्मल इंसान हो। ग़ैर तरबियत याफ़ता हरगिज़ दूसरों की तरबियत नहीं कर सकता। न सिर्फ़ यह कि मुर्बिअे कामिल हो बल्कि उसे ज़ेरे तरबियत अफ़राद का इंतेहाई मोरिदे इतमीनान भी होना चाहिए। इसी सूरत में यह मुमकिन है कि दूसरे अशख़ास उसका हमरंग बनने की कोशिश करें। ज़ाहिर है कि खुदा की तरफ़ से चुने हुए अफ़राद ही ऐसे हो सकते हैं जो हर लिहाज़ से कामिल

हों, इंसान ऐसे कामिल तरीन अफ़राद के ज़ेरे तरबियत मज़हब की वजह से आता है। जो मज़हब से दूर हैं, वह अपना मुर्बबी अम्बिया को कब करार दे सकते हैं?

इंसाफ़ कीजिए कि ज़मीर भला कहाँ इंसान के लिए एक कामिल मुर्बबी बन सकता है। मुर्बबी को हमेशा ज़ेरे तरबियत अशख़ास से मुकम्मल और बलंद होना चाहिए ताकि वह अपने मुमताज़ और नुमायां अख़लाक के ज़रिए उनकी शख़सियत पर असर डाले। इसके अलावा अर्ज़ किया गया कि ज़मीर अच्छे और बुरे अख़लाक की तमीज़ में अक्ल पर भरोसा करता है, इसलिए उसके बारे में हर किस्म की गुमराही का इमकान है! ऐसी सूरत में ज़मीर अख़लाक का राहनुमा कैसे बन सकता है?

मज़हब की पैरवी समाज के लिए उसूलो क़वानीन फ़राहम करती राएजुल वक्त (प्रचलित) बातों की इस्लाह करती है और यह मुसल्लम है कि ज़मीर क़ानून साज़ नहीं हो सकता। वह सिर्फ़ अक्ल के बताए हुए उसूलो क़वानीन को नाफ़िज़ कर सकता है।

हां एक सिफ़त ऐसी ज़रूर है जिसके लिहाज़ से ज़मीर मज़हब का शरीक है। वह यह कि जिस तरह इंसान की अफ़आल का मज़हब निगरां है उसी तरह उनका ज़मीर भी नाज़िर हैं लेकिन हकीकत यह है कि इस एतेबार से भी ज़मीर मज़हब से बहुत पीछे है।

drk

'kk,j&,&feYyr ckuk lniijh

हंगामे नमाज़ शाने तकबीर भी देख
ईमान के अरकान की तस्वीर भी देख
इस्लामे हकीकी की तरफ़ आँख उठा
ये मक़सदे कुरबानी—ए—शब्बीर भी देख



मुख्य समाचार

vk; rYykg l hLrkuh vkj nhxj reke ejk t & , & rdyhn
l c vki l e eRrfgn g jgcj bUdykc bLykeh

अहलेबैत न्यूज एजेंसी अन्ना के मुताबिक़ इराक़ की मजलिसे आला-ए-इस्लामी की गाइडियन कमेटी के रुक्न हुज्जतुल इस्लाम वल मुस्लेमीन शेख़ जलालुद्दीन अस सगीर ने मजलिस के आला ओहदेदारों की रहबरे इन्क़िलाबे इस्लामी हज़रत आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेनई से मुलाकात की ख़बर दी।

उन्होंने बग़दाद की मस्जिदे बरासा में नमाज़े जुमा के खुत्बों के दौरान इराक़ के अवाम को दहशतगर्द टोले दाइश के मुक़ाबिले में हासिल होने वाली कामयाबी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि मौजूदा दौर में दाइश पर कामयाबी हासिल करने के बाद "हशद उश्शाबी" और दीगर इराक़ी फ़ार्सेज़ के मुक़ाबिले में हमारी दो ख़ास ज़िम्मेदारियाँ हैं। शेख़ अल सगीर ने दाइश की नाबूदी को हशद उश्शाबी और फ़ौज़ की ज़िम्मेदारी करार देते हुए कहा: इस वक़्त दाइश के सितमगर अनासिर को शहरों से बाहर निकाल दिया है लेकिन उनके मख़फ़ी सुराग़ों की खोज लगाना भी ज़रूरी है ताकि बयाबानों और इराक़ के सरहदी इलाक़ों से भी उनका सफ़ाया हो जाए। यह काम हमारे बहादुरों के लिए बहुत आसान है।

उन्होंने दूसरी ज़िम्मेदारी को पहली से ज़्यादा अहम करार दिया और कहा: हशद उश्शाबी और इराक़ी फ़ौज़ का अपने बुनियादी ढाँचों का तहफ़फ़ुज़ उनकी दूसरी अहम ज़िम्मेदारी है। क्यों इस्तक़बार हशद उश्शाबी को कमज़ोर करने की कोशिश कर रहा है? बग़दाद के इमामे जुमा ने इस बात की तरफ़ इशारा करते हुए कि अगर इस्तक़बार मैदाने जंग में हमारी ताक़त को कमज़ोर करने की कोशिश कर रहा हो तो हमें तअज्जुब नहीं करना चाहिए, कहा: जो हम देख रहे हैं कि अमरीका हशद उश्शाबी के बाज़ कमांडरों के सिलसिले में जो कुछ कर रहा है वह उनका ज़ाती मुआमिला नहीं है बल्कि अमरीका का अस्ली टारगेट खुद हशद उश्शाबी है। "अन नुजबा", "कताइब", "असाइब", "अबू महदी" और दीगर असकरी गिरोहों पर अमरीका और इस्तक़बार के हम्ले उन नामों के सर बराहान पर नहीं हैं बल्कि वह मुजाहिमत को मुकम्मल तौर पर अपने रास्ते से हटाना चाहते हैं। मजलिसे आला-ए-इस्लामी की गाइडियन कमेटी के रुक्न ने अमरीका के अलावा फ़्रान्स की मुदाख़िलत की भी मज़मूत करते हुए कहा: आप देख रहे हैं कि फ़्रान्स का सदर पूरी बेशर्मी के साथ इराक़ जैसे एक मुस्तक़िल मुल्क के दाख़िली उमूर में मुदाख़िलत कर रहा है। इन बातों से मालूम होता है कि दुश्मन हमारी ताक़त को पहचान चुके हैं और इसके लिए मन्सूबा बंदी कर रहे हैं।

उन्होंने इराक़ के अवाम को होशियार रहने की दावत देते हुए कहा: मुमकिन है कोई यह कहे कि मैं तो अन नुजबा या असाइब, अबू महदी गिरोह का रुक्न नहीं हूँ और मुझे इन साज़िशों से क्या मतलब है? लेकिन जान लें कि वह आज उन कमांडरों की तौहीन करेंगे और कल बाकी वालों को भी मआफ़ नहीं करेंगे। दुश्मन की एक साज़िश यह है कि वह लोगों के शहरी हुकूक को हशद-शाबी के मुक़ाबिले में लाकर खड़ा करें यकीनन लोगों को उनके शहरी हुकूक मिलना चाहिए लेकिन अगर दुश्मन हमारे मुल्क पर हाकिम हो जाएगा तो क्या वह हमारे हुकूक हमें देगा? शेख़ जलालुद्दीन अल सगीर ने ताकीद की: हशद-शाबी हमारी ताक़त का बुनियादी उनसुर है, मरजईयत हमारी ताक़त का बुनियादी मरकज़ है, कौमी इत्तिहाद हमारी ताक़त है, आपस में इत्तिफ़ाक़ हमारी ताक़त है। इराक़ की इस अहम शख़्सियत ने इराक़ की रिज़ाकार फ़ोर्स की जाफ़िशानियों के बारे में कहा: जो कुछ हशद-शाबी ने इराक़ के लिए अनजाम दिया और दुनिया में जो इसका असर रूनुमा हुआ उससे पहले किसी भी तनज़ीम से ऐसा देखने को नहीं मिला।